North Asian International Research Journal of Multidisciplinary

IRJIF IMPACT FACTOR:7.001

ISSN: 2454-2326 Vol.12, Issue, 7 July-2026

Index Copernicus Value: 58.12 Indian Citation Index

NAIRJC UGC-Aligned | HEI-Approved Peer Reviewed Refereed Journal (Under New UGC Guidelines)

DOI: doiglobal.org/10.2026/NAIRJCMD.017

जैन नीतिशास्त्र का व्यावहारिक महत्त्व: एक दार्शनिक अध्ययन

डॉ अमित कुमार शुक्ल

असिस्टेंट प्रोफेसर दर्शनशास्त्र डॉ राम मनोहर लोहिया राजकीय महाविद्यालय मुफ्तीगंज, जौनपुर

सारांश

भारतीय दर्शन मे जैन दर्शन अपना विशिष्ट स्थान रखता है क्यूंकि इसमे नैतिक नियमों पर अत्यधिक बल देते हुए उसे मानव जीवन मे सर्वोपरि स्थान दिया गया है। इसके द्वारा प्रदत्त नैतिक नियम न केवल आध्यात्मिक उन्नति हेतु आवश्यक हैं बल्कि ये इहलौकिक जीवन मे भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जैन नीतिशास्त्र का आधार अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह जैसे सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत हैं। वर्तमान विश्व अनेक संकटों से जूझ रहा है। ये संकट विशिष्ट स्वरूप के साथ साथ वैश्विक भी हैं। विश्व हिंसा , पर्यावरणीय संकट, उपभोक्तावाद , भ्रष्टाचार तथा नैतिक पतन जैसी समस्याएं जहां वैश्विक हैं वहीं पर व्यक्ति अनेक मनोवैज्ञानिक समस्याओ और आत्म विखंडन का शिकार हो रहा है। इस परिस्थिति मे जैन नीतिशास्त्र के व्यावहारिक सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होते हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र मे जैन नीतिशास्त्र के सिद्धांतों और उनके व्यावहारिक महत्त्व के विश्लेषण का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द:जैननीतिशास्त्र, अहिंसा, अपरिग्रह, सत्य, पर्यावरण, नैतिकता।

प्रस्तावना:

जैन दर्शन भारतीय दार्शनिक परंपरा में अद्वितीय स्थान रखता है। यहाँ पर मोक्ष प्राप्ति को मात्र ज्ञान आधारित न मानकर नैतिक आधारशिला पर स्थापित किया गया है। स्पष्ट है कि आध्यात्मिक हो या भौतिक लक्ष्य दोनों के लिए नैतिकता का पालन आवश्यक है। जैन नीतिशास्त्र का उद्देश्य व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास है इसके लिए जैन दर्शन सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चरित्र पर बल देता है। नीतिशास्त्र दर्शन की वह शाखा है जो कर्मों के उचित -अनुचित, सही- गलत होने के मानदंडों की स्थापना करता है। जैन नीतिशास्त्र सैद्धांतिक विवेचन तो करता ही है इसमे जीवन के व्यावहारिक पक्षों का भी समावेश किया गया है । जैनाचार्यों ने आत्मशुद्धि, आत्मसंयम तथा लोककल्याण को नैतिक जीवन का आधार माना है।[1]वर्तमान विश्व अनेक समस्याओं से जूझ रहा है। इन समस्याओं का समाधान जैन नीतिशास्त्र के व्यावहारिक उपागमों में देखा जा सकता है। आज का समाज नैतिक पतन, हिंसा, असहिष्णुता तथा भौतिकवाद की ओर अग्रसर है। ऐसे समय में जैन नीतिशास्त्र का संदेश मानवता के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है।

जैन नीतिशास्त्र का मुख्य उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति है । इसके लिए वह अपने नैतिक सिद्धांतों को प्रस्तुत करता है। जैन दर्शन मे सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान तथा सम्यक् चरित्र अर्थात् त्रिरत्न को अनिवार्य माना गया है।[2] इसके अतिरिक्त इनके अंतर्गत पाँच महाव्रत आते हैं जो हैं – अहिंसा, सत्य, अस्तेय , अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य । ध्यातव्य है कि जैन दर्शन मे पाँच

महाव्रतों के साथ गृहस्थों के लिए अणुव्रतों का भी निर्धारण किया गए है। जिससे जैन दर्शन के नैतिक नियम व्यापकता मे अपनाए जा सकते हैं। यहाँ यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि जैन नीतिशास्त्र के साथ ही साथ जैन ज्ञानमीमांसा का स्याद्वाद और तत्वमीमांसा का अनेकांतवाद भी नैतिक नियमों के अनुरूप विश्व की अनेक समस्याओ के समाधान मे अपनी अचूक एवं व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। स्याद्वाद जहां ज्ञान की सापेक्षता को बताता है कि साधारण मनुष्य का कोई भी ज्ञान पूर्ण नहीं है वही अनेकांतवाद तत्व मे अनेक गुणों को स्वीकार करता है।

जैन नीतिशास्त्र की समकालीन प्रासंगिकता

जैन धर्म का सर्वाधिक महत्वपूर्ण सिद्धांत अहिंसा है। जैनाचार्यों ने मन, वचन तथा कर्म से किसी भी जीव को कष्ट न पहुँचाने को अहिंसा कहा है।[3] जैन दर्शन मे अहिंसा को सर्वोपरि स्थान दिया गया है। इसका पालन प्रत्येक स्तर पर करना अनिवार्य है। वैश्विक स्तर पर देखें तो हिंसा वर्तमान समय की व्यापक समस्या बन चुकी है। आतंकवाद, युद्ध , सांप्रदायिक संघर्ष तथा घरेलू हिंसा विश्व भर मे व्याप्त है। यदि जैन धर्म के अहिंसा सिद्धांत को वैश्विक समुदाय स्वीकार कर ले तो संसार मे शांति की स्थापना संभव है। महात्मा गांधी के सत्याग्रह एवं अहिंसा आंदोलन पर जैन अहिंसा कास्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।[4]गांधीजी द्वारा अहिंसा के व्यावहारिक प्रयोग से हम सभी भली-भांति परिचित है जिसका उपयोग उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन मे किया था।

वर्तमान विश्व मे उपभोक्तावादी प्रवृति बड़ाती जा रही है। वस्तुओ का अधिकाधिक संग्रह और अधिक से अधिक धन इकट्ठा कर लेना हर व्यक्ति का सर्वोपरि लक्ष्य बनता जा रहा है। ऐसी परिस्थिति मे एक तरफ संसाधन पर अत्यधिक दबाब बढ़ता है वहीं दूसरी तरफ इससे

आर्थिक असमानता भी जन्म लेती है। इन समस्याओं का समाधान जैन दर्शन के अपरिग्रह के नैतिक नियम मेंछुपा हुआ है। अपरिग्रह के नैतिक नियम के अनुसार हमें आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संग्रह नहीं करना चाहिए। जैन दर्शन का अपरिग्रह सिद्धांत सीमित उपभोग एवं संतोष का संदेश देता है।[5]यदि उपभोक्तावादी प्रवृत्ति को रोकना है तो जैन दर्शन के अपरिग्रह सिद्धांत का पालन करना होगा। यदि व्यक्ति आवश्यकतानुसार उपभोग करे तो प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण होगा तथा आर्थिक असमानता भी कम होगी। वर्तमान मे सतत विकास की अवधारणा अपरिग्रह की अवधारणा से ही प्रेरित है।

वर्तमान विश्व मे विचारधाराओ के मध्य व्यापक टकराव देखने को मिलता है। प्रत्येक व्यक्ति, समूह या समुदाय अपने विचारधारा को ही एकमात्र सत्य समझता है। इससे वैयक्तिक जीवन से लेकर अन्तराष्ट्रीय स्तर पर अनेक विवाद देखने को मिलते हैं। इस समस्या का समाधान जैन दर्शन के अनेकांतवाद औरस्याद्वाद सिद्धांत में छुपा हुआ है। जैन दर्शन का अनेकान्तवाद यह स्वीकार करता है कि प्रत्येक वस्तु के अनेक पक्ष होते हैं तथा सत्य को विभिन्न दृष्टिकोणों से समझा जा सकता है।[6] इसका तात्पर्य यह है कि हमारा जो भी दृष्टिकोण है वह पूर्णतया सही नहीं होता। जैन दर्शन का स्याद्वाद सिद्धांत भी ज्ञान को एकांगी कहता है। अगर प्रत्येक व्यक्ति यह समझ ले तो संसार की अनेक समस्याओ का समाधान संभव हो सकता है तथा परस्पर विद्वेष मिटाया जा सकता है। इस सिद्धांत के अंगीकरण से धार्मिक संघर्षों को कम किया जा सकता है और धार्मिक सहिष्णुता बढ़ती है। इससे एक तरफ लोकतान्त्रिक संस्कृति मजबूत होती है वही संवाद एवं विचार-विमर्श को प्रोत्साहन मिलता है।

जैन दर्शन मे सत्य का पालन नैतिकता की एक अनिवार्य शर्त है। यहाँ सत्य के पालन से तात्पर्य मन, वचन एवं कर्म से सत्य आचरण करना है। वर्तमान विश्व में सत्य का पालन न करने से अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। ये समस्याए वैयक्तिक स्तर से लेकर समुदाय और राष्ट्र सबको प्रभावित करती हैं। आज का युग डिजिटल युग है। डिजिटल युग में फर्जी समाचार, झूठे प्रचार तथा भ्रामक सूचनाओं का प्रसार एक गंभीर समस्या बन चुका है।जैन धर्म सत्य को नैतिक जीवन का आधार मानता है।[7] सत्य का पालन मानव जीवन मे सुसंगति लाता है। दैनिक जीवन मे देखे तो यह एक तरफ प्रशासन मे पारदर्शिता ले आता है जो कि वर्तमान की एक प्रमुख समस्या है। इससे न्याय व्यवस्था सुधरती है वही यह सामाजिक विश्वास की बदोततारी मे भी सहायक है। गांधी जी ने भी जैन दर्शन की तरह सत्य को अत्यधिक महत्व दिया है।

जैन दर्शन का एक प्रमुख नैतिक नियम अस्तेय है। अस्तेय का तात्पर्य है चोरी न करना, अर्थात बिना दूसरे की अनुमति से उसकी वस्तु ग्रहण न करना । अस्तेयएक नैतिक नियम के रूप मे मानव जीवन मे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। वर्तमान विश्व मे आज रिश्वतखोरी, आर्थिक अपराध, टैक्स चोरी, साइबर अपराध आदि समाज की गंभीर समस्याएँ हैं। इन समस्याओं का प्रमुख कारण है दूसरे की वस्तुओं पर बलात अधिकार कर लेना। अस्तेय का नियम यह सिखाता है कि हमें दूसरों की वस्तु का ग्रहण उसकी अनुमति के बिना नहीं करना चाहिए। अस्तेय के पालन से जहां भ्रष्टाचार कम होगा,वहींआर्थिक न्याय स्थापित होगा।इससे प्रशासनिक ईमानदारी बढ़ेगी और सामाजिक न्याय तथा सामाजिक विश्वास मजबूत होंगे।[8]यदि अस्तेय का पालन किया जाए तो विश्व की अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है।

ब्रह्मचर्य और आत्मसंयम जैन दर्शन के अन्य नैतिक सिद्धांत हैं जो पाँच महाव्रत के अंतर्गत सम्मिलित किए जाते हैं। ब्रह्मचर्य का व्यापक अर्थ इंद्रिय संयम और मानसिक अनुशासन है। इसके द्वारा व्यक्ति अपने शारीरिक एवं मानसिक इच्छाओ को नियंत्रित करता है। वर्तमान विश्व मे उपभोक्तावादी प्रवृत्ति का विस्तार व्यापक पैमाने पर हुआ है। लोगों की इच्छा असीमित होती जा रही है। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने व्यक्ति की इच्छाओ को पंख लगा दिएहैं। व्यक्ति इन इच्छाओ की पूर्ति हेतु उचित अनुचित साधन अपनाता है। इससे समाज में अव्यवस्था फैलती है और अपराध को बढ़ावा मिलता है। वैयक्तिक जीवन मे आत्मविरोध उत्पन्न होता है और व्यक्ति मे आत्मछल का भाव उत्पन्न होता है। इसका सर्वाधिक उपयुक्त समाधान ब्रह्मचर्य और आत्मसंयम है। संयम व्यक्ति मेंआत्मनियंत्रण, मानसिक शांति, नैतिकचरित्र, स्वस्थ जीवनशैलीका विकास करता है।[9]

पर्यावरण क्षरण का संकट आज एक वैश्विक समस्या बन चुका है। आज जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जैव विविधता का विनाश तथा प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन वैश्विक संकट हैं।इस संकट का कारण मनुष्य द्वारा किया जा रहे अनियंत्रित विकास है। जैन दर्शन के सिद्धांतों मे हमे पर्यावरण संरक्षण का सिद्धांत प्राप्त होता है जिसमे अहिंसा का प्रमुख स्थान है। जैन प्राणिमात्र के अस्तित्व एवं उनके संरक्षण को प्रधानता देता है और इसमे प्राणिमात्र के प्रति दया और करुणा का भाव विद्यमान है। जैन दर्शन प्रत्येक जीव में आत्मा स्वीकार करता है-"परस्परोपग्रहो जीवानाम्"। यह सिद्धांत समस्त जीवों की पारस्परिक निर्भरता को स्पष्ट करता है।[10]जैन धर्मवृक्ष संरक्षण, जल संरक्षण, पशु संरक्षण, शाकाहार एवं जैव विविधताको नैतिक कर्तव्य मानता है।इस दृष्टि से जैन नीतिशास्त्र आधुनिक पर्यावरणीय नैतिकता का अत्यंत महत्वपूर्ण आधार है।

वर्तमान मे मानव के अंदर हिंसा, क्रोध, क्रूरता, शत्रु भाव एवं विलगाव की भावना दृष्टिगोचर होती है। इससे विश्व में अशान्ति और परस्पर संदेह की भावना व्याप्त है।जैन नीतिशास्त्र का संदेशअहिंसा, क्षमा, करुणा, मैत्री, समताविश्वशांति की स्थापना में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है।आज युद्ध एवं आतंकवाद वैश्विक संकट बन चुका है। इससे हजारों-लाखों लोग नारकीय जीवन जीने पर विवश हैं। परमाणु हथियार की होड समस्त विश्व मे व्याप्त है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा शांति, मानवाधिकार तथा सतत विकास के जो लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं, वे जैन नैतिक मूल्यों से पर्याप्त समानता रखते हैं।[11] अतः स्पष्ट है कि जैन नैतिक नियम बहुआयामी प्रकृति के हैं जिनसे विश्व शांति की स्थापना संभव है। ये नैतिक मूल्य व्यक्तिगत स्तर पर मानव को शांति प्रदान करने में सहायक हैं।

बहुत से आलोचक जैन नीतिशास्त्र को अत्यधिक आदर्शवादी बताते हैं। उनका मानना है कि ये इतने कठोर हैं कि उनका पालन असंभव है। किन्तु ध्यातव्य है कि जैन धर्म में गृहस्थों के लिए भी अणुव्रत का प्रावधान किया है। वर्तमान मे यदि अवलोकन किया जाए तो जीवन के बहुआयामी क्षेत्रों मे जो भी नैतिक नियम या सिद्धांत हैं वे जैन नैतिक नियमों से पृथक नहीं है। वैयक्तिक हो या सामाजिक दोनों ही दृष्टिकोण से जैन नैतिक नियम अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। दूसरे यदि समस्त विश्व आंशिक रूप मे भी जैन नीतिशास्त्र का अनुगमन करे तो निश्चय ही विश्व शांति की दिशा मे यह एक क्रांतिकारी कदम सिद्ध होगा । इससे स्पष्ट है कि जैनाचार्यों ने व्यावहारिक जीवन को ध्यान में रखकर नैतिक व्यवस्था निर्मित की थी।[12]

निष्कर्ष:

जैन नीतिशास्त्र केवल धार्मिक अनुशासन नहीं बल्कि मानवता के नैतिक पुनर्निर्माण का व्यापक दर्शन है। वर्तमान समय की हिंसा, असहिष्णुता, पर्यावरण संकट, भ्रष्टाचार तथा उपभोक्तावाद जैसी समस्याओं का प्रभावी समाधान जैन नैतिक सिद्धांतों में निहित है।अहिंसा विश्वशांति का मार्ग प्रशस्त करती है, अपरिग्रह पर्यावरण संरक्षण का आधार बनता है, अनेकान्तवाद लोकतांत्रिक सहिष्णुता को सुदृढ़ करता है तथा सत्य एवं अस्तेय सामाजिक विश्वास को बढ़ाते हैं। इसलिए कहा जा सकता है कि जैन नीतिशास्त्र आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना प्राचीन काल में था।

फुटनोट (Footnotes)

1. आचार्य उमास्वाति, *तत्वार्थसूत्र*, अध्याय 1, गाथा 1–4।
2. वही, अध्याय 1।
3. आचार्य कुन्दकुन्द, *समयसार*, गाथा 152–160।
4. Nathmal Tatia, *Studies in Jain Philosophy*, Jain Cultural Research Society, Varanasi, 1951, p. 102.
5. आचार्य महाप्रज्ञ, *अपरिग्रह : एक जीवन दर्शन*, जैन विश्व भारती, लाडनूं, 2003, पृ. 45।
6. आचार्य सिद्धसेन दिवाकर, *सन्मतितर्क*, प्रथम परिच्छेद।
7. आचारांगसूत्र, प्रथम श्रुतस्कंध।
8. P. S. Jaini, *The Jaina Path of Purification*, University of California Press, 1979, pp. 170–180.

9. आचार्य तुलसी, *अणुव्रत दर्शन*, जैन विश्व भारती, लाडनूं, 1995, पृ. 62।

10. *तत्त्वार्थसूत्र*, अध्याय 5, सूत्र 21—"परस्परोपग्रहो जीवानाम्।"

11. Padmanabh S. Jaini, *The Jaina Path of Purification*, University of California Press, 1979, pp. 260–268.

12. आचार्य तुलसी, *अणुव्रत आंदोलन*, जैन विश्व भारती, लाडनूं, 1998, पृ. 38।